अध्याय 36

अय्यूब को एलीहू की अपील (भाग 1)

एलीहू का अंतिम भाषण अध्याय 36 और 37 में है। इसमें उसकी ओर से परमेश्वर के बचाव का विस्तार (36:1-15), अय्यूब से परमेश्वर के सामने घुटने टेकने का आग्रह (36:16-23), परमेश्वर के कामों को समझने का आग्रह (36:24-33), यह आश्चर्य कि आकाशमण्डल परमेश्वर की महिमा की घोषणा करते हैं (37:1-13), अय्यूब से एक निजी अपील (37:14-20), और परमेश्वर की ज़बर्दस्त महिमा का विवरण (37:21-24) शामिल है। ''भाषण का अंतिम दो तिहाई आंधी क बीच में से परमेश्वर के प्रकाशन के लिए अय्यूब को भी और हमें भी तैयार करता है।''[1]

एलीहू परमेश्वर की ओर से बात करता है (36:1-15)

[1]फिर एलीहू ने यह भी कहा, [2]''कुछ ठहरा रह, और मैं तुझ को समझाऊँगा, क्योंकि परमेश्वर के पक्ष में मुझे कुछ और भी कहना है। [3]मैं अपने ज्ञान की बात दूर से ले आऊँगा, और अपने सिरजनहार को धर्मी ठहराऊँगा। [4]क्योंकि निश्चय मेरी बातें झूठी न होंगी, वह जो तेरे संग है वह पूरा ज्ञानी है। [5]देख, परमेश्वर सामर्थी है, और किसी को तुच्छ नहीं जानता; वह समझने की शक्ति में समर्थ है। [6]वह दुष्टों को जिलाए नहीं रखता, और दीनों को उनका हक़ देता है। [7]वह धर्मियों से अपनी आँखें नहीं फेरता, वरन् उनको राजाओं के संग सदा के लिये सिंहासन पर बैठाता है, और वे ऊँचे पद को प्राप्त करते हैं। [8]चाहे वे बेड़ियों में जकड़े जाएँ और दुःख की रस्सियों से बाँधे जाएँ, [9]तौभी परमेश्वर उन पर उनके काम, और उनका यह अपराध प्रगट करता है, कि उन्होंने गर्व किया है। [10]वह उनके कान शिक्षा सुनने के लिये खोलता है, और आज्ञा देता है कि वे बुराई से दूर रहें। [11]यदि वे सुनकर उसकी सेवा करें, तो वे अपने दिन कल्याण से, और अपने वर्ष सुख से पूरे करते हैं। [12]परन्तु यदि वे न सुनें, तो वे तलवार से नष्ट हो जाते हैं, और अज्ञानता में मरते हैं। [13]परन्तु वे जो मन ही मन भक्तिहीन होकर क्रोध बढ़ाते, और जब वह उनको बाँधता है, तब भी दोहाई नहीं देते, [14]वे जवानी में मर जाते हैं और उनका जीवन लुच्चों के बीच में नष्ट होता है। [15]वह दुःखियों को उनके दुःख से छुड़ाता है, और उपद्रव में उनका कान खोलता है।''

फ्रांसिस आई. एंडरसन ने कहा है कि यह हवाला ''पुस्तक में और कहीं भी मिलने वाले हवाले से अधिक तैयार और परम्परागत थियोलॉजी की दिलचस्प बात है।''[2] अपने इस अंतिम भाषण में एलीहू उतना रूखा नहीं लगता जितना पहले था।

आयतें 1, 2. कुछ ठहरा रह का तात्पर्य यह है कि इसकी पूर्ण व्याख्या की उम्मीद है। **मैं**

तुझ को समझाऊंगा एलीहू के उस प्रमाण को प्रस्तुत करने के लिए है जो अय्यूब को सिखाएगा या उसे विश्वास दिलाएगा।

आयत 3. दूर से ''दूर स्थान'' का संकेत है ''जहां परमेश्वर का वास है। किसी की समझ के स्रोत को उसकी मान्यता को पक्का करने के लिए माना जाता था।''[3] **धर्मी** (*tsedeq, त्सेडेक़*) ''एक ऐसा शब्द है जिसमें 'न्याय' के साथ साथ 'सही/धार्मिकता/सच्चाई' सब आ जाते हैं।''[4]

आयत 4. ''क्योंकि निश्चय मेरी बातें झूठी न होंगी, वह जो तेरे संग है वह पूरा ज्ञानी है।'' कितना गुमान है! एलीहू सचमुच में अपनी ही प्रतिभा की सनद देने में ढीठ था। अगले अध्याय में उसने कहा कि सृजनहार ''सर्वज्ञानी'' है (37:16)। एलीहू ने ज्यादातर वही दोहराया जो उसने और मित्रों ने परमेश्वर के दुष्टों को बदला देने और धर्मियों को दिए जाने वाली राहत के सम्बन्ध में पहले कहा था। आल्डन ने टिप्पणी की है, ''यदि यह बात 'परमेश्वर के पक्ष में कुछ और भी कहना है' (आयत 2), जो यह निराशाजनक है क्योंकि आवश्यक रूप में एलीहू ने बदला लिए जाने की वही घिसी पिटी पुरानी थियोलॉजी को दोहराया कि परमेश्वर दुष्टों का वध करेगा और धर्मियों को सम्भाल लेगा।''[5]

आयत 5. फिर एलीहू ने परमेश्वर की सामर्थ और समझ पर ज़ोर दिया। वह अपने सारे न्यायों में धर्मी है; वह किसी के भी प्रति पक्षपाती या पूर्वधारणा से भरा हुआ नहीं है।

आयत 6. एलीहू ने अय्यूब के इस दावे को नकार दिया कि **दुष्ट** जीवित रहते और फलते फूलते हैं। परन्तु अय्यूब ने कहीं पर भी यह नहीं कहा कि दुष्टों को यहोवा की ओर से विशेष सुरक्षा मिलती है। उसने इस बात को अवश्य देखा कि उनमें से कुछ लोग सामान्य जीवन जीते और खुशहाल रहते हैं (21:7-15)। अय्यूब ने यह संकेत नहीं दिया था कि **दीनों** को उनके **हक्क** से वंचित रखा गया था। कहने का अभिप्राय यह है कि सामान्य कहावतों को हर किसी पर लागू होने वाली बातों के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए।

आयत 7. ''वह धर्मियों से अपनी आँखें नहीं फेरता, वरन् उनको राजाओं के संग सदा के लिये सिंहासन पर बैठाता है, और वे ऊँचे पद को प्राप्त करते हैं।'' ''धर्मियों'' उनके लिए कहा गया है जो परमेश्वर के वफ़ादार हैं अर्थात जो उसमें भरोसा रखते हैं। एलीहू ''मन के दीन'' लोगों के ऊंचा किए जाने का संकेत दे रहा हो सकता है, जो भजन संहिता की पुस्तक में मिलने वाला विषय है ''मैं लड़कपन से लेकर बुढ़ापे तक देखता आया हूं; परन्तु न तो कभी धर्मी को त्यागा हुआ, और न उसके वंश को टुकड़े मांगते देखा है'' (भजन संहिता 37:25); ''वह कंगाल को मिट्टी पर से, और दरिद्र को घूरे पर से उठाकर ऊंचा करता है, कि उसको प्रधानों के संग, अर्थात् अपनी प्रजा के प्रधानों के संग बैठाए'' (भजन संहिता 113:7, 8)। यूसुफ की कहानी में ऐसे में ऊंचा किए जाने का एक और उदाहरण मिलता है (उत्पत्ति 37-41)।

आयतें 8-10. आयतें 8 से 12 में एलीहू ने एक के बाद एक सशर्त वाक्यों का इस्तेमाल करते हुए दुःख उठाने वाले धर्मियों की बात की (36:8-10, 11, 12)। **''चाहे वे बेड़ियों में जकड़े जाएँ और दुःख की रस्सियों से बाँधे जाएँ।''** धर्मियों का ''दुःख'' उन्हें पाप के दायरे में सिखाने के लिए अनुशासन या ताड़ना के लिए होता है। ''बेड़ियों'' और ''रस्सियों'' का रूपक अय्यूब की बात को याद दिलाता है कि परमेश्वर ने उसके ''पांवों को काठ में ठोका'' था (13:27)। बेशक अय्यूब ने अपने दुःख सहने को पाप के साथ नहीं जोड़ा।

''तौभी परमेश्वर उन पर उनके काम, और उनका यह अपराध प्रगट करता है, कि उन्होंने गर्व किया है।'' परमेश्वर उन्हें बदलने का अवसर देने के लिए दु:ख सहने वालों पर ''उनके अपराध'' प्रकट करता है। अपने आप में ''गर्व'' (*gabar, गाबार*) करने का अर्थ ''अहंकारपूर्वक व्यवहार'' करना है (देखें NRSV)। क्रिया शब्द 15:25 में मिलता है: ''उस ने तो ईश्वर के विरुद्ध हाथ बढ़ाया है, और सर्वशक्तिमान के विरुद्ध वह *ताल ठोंकता है*।''

''वह उनके कान शिक्षा सुनने के लिये खोलता है, और आज्ञा देता है कि वे बुराई से दूर रहें।'' ''शिक्षा'' (*musar, मुसार*) शब्द का अनुवाद और जगह पर ''अनुशासन'' और ''डांट'' किया गया है (5:17; 20:3 पर टिप्पणियां देखें)। ''दूर रहें'' (*shub, शब*) शब्द का अर्थ पुराने नियम में बार बार ''पश्चात्ताप'' इस्तेमाल हुआ है (यिर्मयाह 5:3; 8:4; यहेजकेल 14:6; 18:32)।

आयत 11. ''यदि वे सुनकर उसकी सेवा करें, तो वे अपने दिन कल्याण से, और अपने वर्ष सुख से पूरे करते हैं।'' यह दूसरा सर्शत वाक्य दु:ख सहने वाले को पश्चात्ताप में परमेश्वर के अनुशासन को मान लेने और इसके लिए बहुतायत से आशीषित होने के रूप में दिखाता है। चाहे यह सच्चाई की सामान्य बात है पर यह अय्यूब के मामले में मेल नहीं खाती। वह एलीहू तथा मित्रों के द्वारा दिखाया जाने वाला ज़िद्दी पापी नहीं था।

आयत 12. ''परन्तु यदि वे न सुनें, तो वे तलवार से नष्ट हो जाते हैं, और अज्ञानता में मरते हैं।'' यह तीसरा सशर्त वाक्य दु:ख सहने वाले को परमेश्वर के अनुशासन केा न मानने और बुरी तरह से दण्ड पाने वाले के रूप में दिखाता है। चाहे एलीहू एक सामान्य सच्चाई बता रहा था पर यह स्पष्ट है कि वह अय्यूब को उन लोगों में से मानता था जो ''अज्ञानता में मरते हैं।''

आयत 13. आयत 12 में पश्चात्तापहीन लोगों को आयत 13 में **मन ही मन भक्तिहीन** कहा गया है। परमेश्वर के अनुशासन के सामने समर्पण करने के बजाय वे **क्रोध** में विद्रोह करते और परमेश्वर के आगे **दोहाई नहीं देते**।

आयत 14. भक्तिहीन लोगों के जीवन उनके विद्रोह के कारण काट दिए जाने के कारण अपमान में खत्म होते हैं। अय्यूब की पुस्तक में इस शब्द का अनुवाद केवल यहीं पर **लुच्चों** *q^{e}deshim* (*क़ेडेशिम*) हुआ है। परन्तु व्यवस्था में (व्यवस्थाविवरण 23:17) और नबियों (होशे 4:14) में लुच्चों की निंदा की गई है। मूर्तिपूजक लोगों के बीच पुरुष और महिला वेश्या एक धार्मिक व्यवस्था थी। स्पष्टतया कई भक्तों की मृत्यु योनसंक्रमित रोगों के कारण असमय हो जाती थी।

आयत 15. ''वह दुखियों को उनके दुख से छुड़ाता है, और उपद्रव में उनका कान खोलता है।'' यह वाक्य 33:16-30 में एलीहू की पहले कही गई बात का संक्षिप्त रूप है। ''दुखियों को उनके दु:ख में'' उन्हें अपनी गलती को मानकर पश्चात्ताप करवाने वाला होना चाहिए। होमेर हेली ने लिखा, ''उनके उपद्रव में छुटकारे का अपना संदेश सुनाने के लिए परमेश्वर उनका कान खोलता है; वह उनका छुटकारा चाहता है, न कि उनका विनाश।''[6]

अय्यूब से परमेश्वर के सामने झुक जाने की अपील (36:16-23)

[16]**''परन्तु वह तुझ को भी क्लेश के मुँह में से निकालकर ऐसे चौड़े स्थान में जहाँ**

**सकेती नहीं है, पहुँचा देता है, और चिकना चिकना भोजन तेरी मेज़ पर परोसता है। [17]परन्तु तू ने दुष्टों का सा निर्णय किया है इसलिये निर्णय और न्याय तुझ से लिपटे रहते हैं। [18]देख, तू क्रोध में भड़ककर ठट्ठा मत कर, और न प्रायश्चित को अधिक बड़ा जानकर मार्ग से मुड़। [19]क्या तेरा रोना या तेरा बल तुझे दुःख से छुटकारा देगा? [20]उस रात की अभिलाषा न कर, जिसमें देश देश के लोग अपने अपने स्थान से मिटाए जाते हैं। [21]चौकस रह, अनर्थ काम की ओर मत फिर, तू ने तो दुःख से अधिक इसी को चुन लिया है। [22]देख, परमेश्वर अपने सामर्थ्य से बड़े बड़े काम करता है, उसके समान शिक्षक कौन है? [23]किसने उसके चलने का मार्ग ठहराया है? और कौन उससे कह सकता है, 'तू ने अनुचित काम किया है?'''

एलीहू दुष्टों की दुर्दशा के अधिक सामान्य कथनों से मुड़कर अय्यूब से व्यक्तिगत तौर पर बात करने के लिए मुड़ा। इस पूरे हवाले में ''तुझ'' और ''तू'' ''तेरा'' सर्वनाम एकवचन में ही हैं। एलीहू ने अय्यूब से एक अंतिम अपील की कि जो भी बुराई उसने की हो वह उससे मन फिरा ले ताकि परमेश्वर उसे चंगा कर सके।

आयत 16. एलीहू ने तर्क दिया कि परमेश्वर अय्यूब से पाप और मृत्यु का मार्ग छोड़ देने को कह रहा था। **निकालकर** शब्द (*suth, सुथ*) से लिया गया है और इस आयत में इसका अर्थ सकारात्मक है; NIV में इस शब्द का अनुवाद ''प्रणय निवेदन'' के रूप में हुआ है। परन्तु आयत 18 में *suth* दोबारा नकारात्मक अर्थ के साथ मिलता है।

यदि अय्यूब परमेश्वर की बुलाहट का अनुकूल उत्तर देता तो उसने उसे **ऐसे चौड़े स्थान में जहाँ सकेती नहीं है** पहुंचा देना था। जॉन ई. हार्टले ने समझाया है कि ''इब्रानी विचार में, चौड़ा अर्थात खुला स्थान छुटकारे या समृद्धि का प्रतीक था। इसके विपरीत तंग, संकरा स्थान विपत्ति, उदासी और नाकामी का प्रतीक थी।''[7] यह स्वतन्त्रता ''बेड़ियों में जकड़े'' होने और ''दुःख की रस्सियों से बांधे'' जाने के विपरीत था (36:8)। अय्यूब की **मेज** पर भी **चिकना चिकना भोजन** होना था। ''चिकना चिकना'' समृद्धि का प्रतीक है, वैसे ही जैसे पुस्तक के आरम्भ में अय्यूब को मिलता था। शायद एलीहू ने अय्यूब के बड़े घराने का सरदार बनने की कल्पना की जिसमें वह बड़ी दावत दे रहा है।

आयत 17. ''परन्तु तू ने दुष्टों का सा निर्णय किया है इसलिये निर्णय और न्याय तुझ से लिपटे रहते हैं।'' क्रिया शब्द ''निर्णय किया'' (*male', माले*) का अनुवाद और व्याख्या कम से कम दो तरह से की गई है। NRSV में कहा गया है कि अय्यूब ''दुष्टों के मामले से *भरा* था,'' जो उसकी शिकायत की बात करता है कि वे आम तौर पर बिना दण्ड के रहते हैं। इसके विपरीत NIV में कहा गया है कि अय्यूब ''दुष्टों को मिलने वाले दण्ड से *भरा* था'' या परमेश्वर के दण्ड को खुद भुगत रहा था। दूसरी पंक्ति में इस भावना को व्यक्त किया गया है: ''निर्णय और न्याय तुझ से लिपटे रहते हैं।''

आयत 18. ''देख, तू क्रोध में भड़ककर ठट्ठा मत कर।'' यह चेतावनी मित्रों की ओर उसके साथ किए गए व्यवहार के कारण अय्यूब के क्रोध और परमेश्वर से उसके परिकल्पित विराग का संकेत हो सकती है। ''ठट्ठा'' (*sapaq, शापाक़*) शब्द का मूल अर्थ ताना देते हुए तालियां बजाना है (27:23; 34:37)।

''और न प्रायश्चित को अधिक बड़ा जानकर मार्ग से मुड़।'' ''प्रायश्चित'' (*koper,*

कोपर) शब्द पुस्तक में कई और बार मिलता है (पर टिप्पणियां देखें 33:24)। इस शब्द का अनुवाद ''घूस'' भी हो सकता है (1 शमूएल 12:3; आमोस 5:12) और यहां इसका संकेत यही हो सकता है (देखें NEB; TEV; NIV; NJPSV; NLT)। इस वाक्य का सही सही अर्थ अस्पष्ट है।

आयत 19. निश्चय ही अय्यूब की सम्पत्ति उसके कष्ट को रोकने के लिए प्रयाप्त नहीं थी। **रोना या बल** के बजाय कुछ लोग *shua'* (*शुआ*) का अनुवाद ''सहायता के लिए पुकार'' के रूप में करते हैं (देखें ASV; TEV; NRSV)। NASB में भी 30:24 में इस अर्थ का इस्तेमाल इसी प्रकार से हुआ है। यहां पर अय्यूब की हर पुकार (और शिकायत) उसे बचा नहीं पाए।

आयत 20. ''उस रात की अभिलाषा न कर, जिसमें देश देश के लोग अपने अपने स्थान से मिटाए जाते हैं।'' अय्यूब अकाल मृत्यु की चेष्टा न करे जैसे उसने अध्याय 3 में की थी। ''मिटाए जाते'' (*'alah, आलाह*) शब्द का मूल अर्थ ''ऊपर जाना'' है।

आयत 21. ''चौकस रह, अनर्थ काम की ओर मत फिर, तू ने तो दुःख या दीनता से अधिक इसी को चुन लिया है।'' पहली पंक्ति का अधिक अक्षरश: अनुवाद हो सकता है ''सावधान हो जा, बुराई करने से मुड़ जा।'' एलीहू ने आरोप लगाया कि अय्यूब ने बुराई को ''चुन लिया'' (*bachar, बाचार*) या ''प्राथमिकता'' दी थी।[8]

आयत 22. संसार के सृजनहार और पालनहार के रूप में परमेश्वर के **बड़े** रुतबे में किसी को उसके साथ मिलाया नहीं जा सकता। अनुवाद हुआ शब्द **सामर्थ**, *koach* (*कोच*), अय्यूब की पुस्तक के लेखक का पसंदीदा शब्द है। इस अध्याय में इसका इस्तेमाल तीन बार हुआ है (36:5, 19, 22)।

''उसके समान शिक्षक कौन है?'' उत्तर है ''कोई नहीं!'' परमेश्वर को ''शिक्षक'' बताकर एलीहू अय्यूब को सुधार के लिए उसके निर्देश और अनुशासन को मानने की सलाह दे रहा था। यशायाह ने भी परमेश्वर को अपने लोगों का ''उपदेशक'' बताया (यशायाह 30:20)।

आयत 23. ''किसने उसके चलने का मार्ग ठहराया है? और कौन उससे कह सकता है, 'तू ने अनुचित काम किया है?''' इन प्रश्नों के द्वारा एलीहू अय्यूब से कह रहा था कि वह अपने दुःखों के लिए परमेश्वर की आलोचना न करे बल्कि विनम्रतापूर्वक इसे मानकर इससे सबक ले।

परमेश्वर के काम को समझने की अपील (36:24-33)

[24]''उसके कामों की महिमा और प्रशंसा करना स्मरण रख, जिसकी प्रशंसा का गीत मनुष्य गाते चले आए हैं। [25]सब मनुष्य उसको ध्यान से देखते आए हैं, और मनुष्य उसे दूर दूर से देखता है। [26]देख, परमेश्वर महान् और हमारे ज्ञान से कहीं परे है, और उसके वर्ष की गिनती अनन्त है। [27]क्योंकि वह तो जल की बूंदें ऊपर को खींच लेता है वे कुहरे से मेंह होकर टपकती हैं, [28]वे ऊँचे ऊँचे बादल उँडेलते हैं, और मनुष्यों के ऊपर बहुतायत से बरसाते हैं। [29]फिर क्या कोई बादलों का फैलना और उसके मण्डल में का गरजना समझ सकता है? [30]देख, वह अपने उजियाले को चारों ओर फैलाता है, और समुद्र की थाह को ढाँपता है। [31]क्योंकि वह देश देश के लोगों का न्याय इन्हीं से करता है, और भोजनवस्तुएँ

बहुतायत से देता है। [32]वह बिजली को अपने हाथों में लेकर उसे आज्ञा देता है कि निशाने पर गिरे। [33]इसकी कड़क उसी का समाचार देती है पशु भी प्रगट करते हैं कि अन्धड़ चढ़ा आता है।''

आयत 24. ''उसके कामों की महिमा और प्रशंसा करना स्मरण रख, जिसकी प्रशंसा का गीत मनुष्य गाते चले आए हैं।'' पुराने ज़माने के भजनकारों तथा कवियों ने परमेश्वर के अद्‌भुत कामों के गीत गाए। भजन संहिता 19 इस प्रकार के भजन का एक उदाहरण है:

> आकाश परमेश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है। दिन से दिन बातें करता है, और रात को रात ज्ञान सिखाती है। न तो कोई बोली है और न कोई भाषा जहां उनका शब्द सुनाई नहीं देता है। उनका स्वर सारी पृथ्वी पर गूंज गया है, और उनके वचन जगत की छोर तक पहुंच गए हैं। उन में उस ने सूर्य के लिये एक मण्डप खड़ा किया है, जो दुल्हे के समान अपने महल से निकलता है। वह शूरवीर के समान अपनी दौड़ दौड़ने में हर्षित होता है। वह आकाश की एक सिरे से निकलता है, और वह उसकी दूसरे सिरे तक चक्कर मारता है; और उसकी गर्मी सबको पहुंचती है (भजन संहिता 19:1-6)।

एलीहू चाहता था कि अय्यूब अपनी खुद की समस्याओं की शिकायतें करने के बजाय परमेश्वर के भयदायक कामों के लिए उसकी महिमा करे।

आयत 25. सृष्टि की श्रेष्ठता सृष्टिकर्त्ता की मनुष्यजाति के सामने साक्षी है। पौलुस ने लिखा, ''उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं'' (रोमियों 1:20)।

आयत 26. ''देख, परमेश्वर महान् और हमारे ज्ञान से कहीं परे है, और उसके वर्ष की गिनती अनन्त है।'' एलीहू परमेश्वर के न्याय से उसकी समझ की बात करने लगा। परन्तु एंडरसन ने चेतावनी दी कि इसमें एक खतरा है: ''अप्रमाणित न्याय से रहस्यपूर्ण समझ में आश्रय लेने का अर्थ परमेश्वर को रहस्य के बादल में छिपाने से बढ़कर नहीं है।''[9] हम इस बात को समझते हैं कि मनुष्य की सीमित समझ परमेश्वर को पूरी तरह से कभी ''जान'' नहीं सकती है, परन्तु हम इतना ''जान'' सकते हैं कि वह हम से प्रेम करता है और हम उसके साथ सम्बन्ध में प्रवेश कर सकते हैं।

आयतें 27, 28. इन आयतों ने एलीहू ने प्रकृति में दिखाए गए परमेश्वर के परोपकारी विवरण को आरम्भ किया जो अध्याय 37 तक जाता है। पहले **जल** को पृथ्वी पर से उठा लिया जाता है और फिर **मेह** में होकर **टपक** जाता है जिसे **बादल उण्डेलते हैं**। पृथ्वी पर वर्षा के दिए जाने को परमेश्वर की ओर से आशीष के रूप में देखा जाता था। बादलों को इसे रोक रखने को परमेश्वर की नाराजगी का संकेत माना जा सकता था जैसा कि एलिय्याह की कहानी में मिलता है (1 राजाओं 17; 18; याकूब 5:17, 18)।

आयतें 29, 30. इस रूपक को आगे बिजली के गर्जने में बताया गया है। **बादलों का फैलना और उसके मण्डल में का गरजना** और **अपने उजियाले को चारों ओर फैला**ना सब परमेश्वर की जबर्दस्त सामर्थ को दिखाते हैं। निराला शब्द ''गर्जना'' (*th^{e}shu'ah, थिसुआ*) का अर्थ आम तौर पर ''ऊंची आवाज'' होता है (देखें KJV); संदर्भ में यह संकेत देता है कि

यह आकाश से होने वाली ''गर्जना'' थी। अन्य हवालों में परमेश्वर को बादलों के ऊपर सवार दिखाया गया है (भजन संहिता 104:3; यशायाह 19:1)। यहां पर ''बादल'' ''उसके मण्डप'' का काम करते हैं। ''मण्डप'' के लिए शब्द, *sukkah* (*सुक्काह*), का अनुवाद आम तौर पर ''झोंपड़ी'' यानी ''अस्थाई आश्रय'' हुआ है।[10] अपने निवासस्थान से परमेश्वर ''गर्जना'' को भेजता है। **समुद्र की थाह को ढांपता** वाक्य को दो प्रकार से समझा गया है। TEV में कहा गया है, ''समुद्र की थाह गहरी रहती है।'' परन्तु NLT में कहा गया है कि गर्जना ''समुद्र की थाह को रौशन कर देती है'' (देखें CEV; NCV)। अन्य शब्दों में परमेश्वर इन स्थानों को थोड़े समय के लिए रौशनी से ''ढांपता'' है।

आयत 31. परमेश्वर मौसम के ऊपर अपने पूर्ण नियन्त्रण से **न्याय** करता है। वह हल्की बारिश भेजकर जिसे फसल बढ़ने में सहायता मिलती है लोगों को आशीष देता है, **लोगों** को **भोजन** वस्तुएं बहुतायत से देकर (देखें प्रेरितों 14:17) सहायता करता है।

आयत 32. परमेश्वर भयंकर आंधी भेजकर दण्ड देता है उसे पूरी सटीकता से निशाना लगाते हुए **बिजली** दिखाते हुए दिखाया गया है। यह रूपक रसशमरा में मिले ''गर्जन के बाद'' के ठूंठ पर दिखाए गए रूपक जैसा है। संतान के देवता तथा तूफ़ान के देवता के रूप में बाल को बाएं हाथ में बिजली के बाण लिए दिखाया गया है जो भाली में बदल जाता है।[11]

आयत 33. ''इसकी कड़क उसी का समाचार देती है पशु भी प्रगट करते हैं कि अन्धड़ चढ़ा आता है।'' इस आयत के सही सही अनुवाद पर विवाद है। हिंदी के साथ NASB का अर्थ है कि गर्जन के आवाज आने वाले तूफ़ान के बीच परमेश्वर की ''उपस्थिति'' का संकेत देती है। इसके अलावा ''पशुओं'' का व्यवहार भी इस बात का संकेत होता है कि तूफ़ान आने वाला है। कई संस्करणों में ''पशु'' के बजाय तूफ़ान को परमेश्वर के ''क्रोध'' का संकेत बताया गया है (NEB; NJB; NRSV; NJPSV; CEV; NLT)।

तूफ़ान के सम्बन्ध में आल्डन ने 36:27-33 के विचार को संक्षिप्त किया है:

> मौसम को नियन्त्रित करके परमेश्वर संसार तथा इसके निवासियों के ऊपर अपनी सामर्थ को दिखाता है। नूह के समय की प्रलय से लेकर प्रकाशितवाक्य के महाप्रलय की घटनाओं में परमेश्वर अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बारिश या गर्मी को अपनी मर्ज़ी से चलाता है। आज के दिन तक मौसम के सम्बन्ध में एक भेद है जो लोगों को डराता है।[12]

प्रासंगिकता

ईश्वरीय प्रभुत्व: तूफ़ान का परमेश्वर (36:24-33)

एलीहू ने यहोवा को तूफ़ान के परमेश्वर के रूप में दिखाया। वही जो बादलों को फैलाता और बारिश को भेजता है। वह गर्जन के प्रभावशाली गाज से आकाश को चमका देता है और बिजली की बड़ी गरज से पृथ्वी को कंपकंपा देता है। वह तूफ़ान को उन लोगों का न्याय करने के लिए जिन्हें उसने सृजा है इस्तेमाल करता है। वह हलकी बारिश से आशीष मिलती है क्योंकि उससे फसलें होती हैं और लोगों को बहुतायत में भोजन वस्तुएं मिलती हैं। उसकी भयंकर गरज एक श्राप है, जो अपने ठहराए हुए निशाने पर वार करती है। मौसम के ऊपर परमेश्वर के

नियन्त्रण का एलीहू का चित्रण उससे मेल खाता है जो हमें शेष पुराने नियम से पता चलता है (उदाहरण के लिए, भजन संहिता 29; 77)।

नये नियम में यीशु ने अपनी ईश्वरीयता को समुद्र में तूफ़ान को शांत करके दिखाया था जब वह अपने चेलों के साथ एक नाव में था तो गलील की झील में आधी आ गई थी। आंधी इतनी तेज थी कि इससे नाव लहरों में डूब गई थी। भयभीत चेलों के द्वारा उसे नींद से जगाने पर केवल इतना कहकर तूफ़ान को शांत कर दिया था, ''शांत रह, थम जा!'' (मरकुस 4:39; NIV)।

पौलुस ने तूफ़ान पर परमेश्वर के नियन्त्रण का इस्तेमाल उसकी करुणा और वफ़ादारी की तैयारी के रूप में किया, चाहे बहुत से लोगों ने उसे झूठे देवताओं की पूजा करने वाला मानकर नकार दिया था। पौलुस ने लुस्त्रा में मूर्तियों को मानने वालों को बताया जिन्होंने उसकी और बरनबास की पूजा करने की कोशिश की थी:

> ''हे लोगो, तुम क्या करते हो? हम भी तो तुम्हारे समान दुःख-सुख भोगी मनुष्य हैं, और तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं कि तुम इन व्यर्थ वस्तुओं से अलग होकर जीवते परमेश्वर की ओर फिरो, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है बनाया है। उसने बीते समयों से सब जातियों को अपने-अपने मार्गों में चलने दिया। तौभी उसने अपने आप को बे-गवाह न छोड़ा; किन्तु वह भलाई करता रहा, और आकाश से वर्षा और फलवन्त ऋतु देकर तुम्हारे मन को भोजन और आनन्द से भरता रहा'' (प्रेरितों 14:15-17)।

परमेश्वर उन लोगों को भी अशीष देता है जिन्होंने उसके विरुद्ध विद्रोह किया है, यीशु ने कहा, ''जिस से तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भले और बुरे दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मी और अधर्मी दोनों पर मेंह बरसाता है'' (मत्ती 5:45)।

पश्चिमी संस्कृति में बहुत कम लोग तूफ़ान को झूठा देवता कहेंगे (परम्परागत अर्थ में)। परन्तु बहुतों ने परमेश्वर की ईश्वरीय महिमा को छीन लिया है। जब भी हम मौसम के बारे में सुनते हैं तो आम तौर पर इसे ''प्रकृति मां'' कहा जाता है। बहुत कम होंगे, यदि हुए, जो मौसम का हाल बताने वाले ''पिता परमेश्वर'' का नाम लेंगे। यह प्रकृति विज्ञान को ईश्वर बनाने की है। हम जल-चक्र तथा बादल के बनने की प्रक्रिया को समझा सकते हैं। मौसम विज्ञानी यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि (अगले दिन या हफ्ते) गर्म रहने वाला है या सर्द, धूप खिली रहेगी या बारिश होगी, मौसम सुहाना होगा या मौसम में नमी छाई रहेगी। चाहे उनकी भविष्यवाणियां यकीनन अचूक नहीं होतीं। वे मौसम के प्रचण्ड पैटर्न को देखकर लोगों को सम्भावित तूफ़ान, आंधी, सैलाब और बर्फ के तूफ़ान के आने की चेतावनी दे सकते हैं। यह विज्ञान मनुष्यजाति के लिए एक बड़ी सेवा है और इसने हज़ारों जिंदगियां बचाई हैं परन्तु लोग भूल गए हैं कि मौसम के पीछे परमेश्वर है। हम इसकी भविष्यवाणी कर सकते या इसका अंदाज़ा लगा सकते हैं पर हम इस पर काबू कभी नहीं पा सकते। तूफ़ान का केवल एक ही परमेश्वर है और वह हम से महिमा पाने का हक्कदार है।

डी. स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब*, द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993),

347. [2]फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमैंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1974), 258. [3]जॉन ई. हार्टले, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 468. [4]आल्डन, 348. [5]वहीं, 349. [6]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 313. [7]हार्टले, 473-74. [8]लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, *द हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:119-20. [9]एंडरसन, 262. [10]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, ऐंड चार्ल्स ए. ब्रिगस, *ए हिब्रू ऐंड इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट* (ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रैस, 1968), 697.

[11]*द इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संशोधित संस्करण, ऐंड संस्क. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. इर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1979), 1:377 में कर्ट गरहर्ड जंग, ''बाल'' देखें। [12]आल्डन, 358.